INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 7 | AUGUST - 2022

ममता कालिया के उपन्यासों में नारी स्वतंत्रता

स्वाति पाण्डेय[1] & डॉ. प्रेमशंकर शुक्ल[2]
[1]शोधार्थी हिन्दी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
[2]विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, एस.आर.पी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय हनुमना, जिला रीवा (म.प्र.)

सारांश –

भारत में स्वतंत्रता–प्राप्ति के साथ ही सामाजिक परिवर्तन हुआ, इससे जो विशेषता उभर कर सामने आयी वह है वैचारिक पुनर्जन्म की। इस सामाजिक परिवर्तन ने नर–नारी सम्बन्धी धारणाओं को खण्डित किया। जहाँ परिवार में माता–पिता का कन्या के जन्म के साथ ही उद्देश्य मात्र उसके विवाह तक सीमित रहता था। वहाँ आज माता–पिता का उद्देश्य शिक्षा और नौकरी से भी जुड़ गया। पितृसत्तात्मक व्यवस्था यथावत रूप में चली आ रही, इसलिए पुरुष की परम्परागत मनोवृत्तियों में बदलाव नहीं आया। नारी दोहरी मनः स्थिति का शिकार हुई। बेशक नारी ने अपनी पहचान एवं सामाजिक मान्यता के लिए बहुत संघर्ष किया है। लेकिन पुरुष–प्रवृत्तियों की गति हमेशा नारी के संघर्ष की गति से तेज रही है।

मुख्य शब्द – ममता कालिया, नारी, सामाजिक, संघर्ष एवं स्वतंत्रता।

प्रस्तावना –

ममता जी ने नारी की सामाजिक स्वतंत्रता पर विशेष बल दिया है। उन्होंने सामाजिक विधानों में नारी की पराधीन जिन्दगी को करीब से देखा था, देखा ही नहीं अनुभव भी किया था। नारी के प्रति प्राप्त होने वाली समाज की व्यावहारिक विसंगतियों को उन्होंने अनुभव किया था। सम्भवतः इसी कारण उनके उपन्यासों में नारी की सामाजिक समस्याओं का विश्लेषण विस्तार से प्राप्त होता है। ममता जी ने स्वयं स्वीकार किया है – ''जितना यह सच है उतना ही यह भी कि केवल भाव–बोध के सहारे नहीं टिकी रहती कहानी, जब तक उसमें वृहत्तर समय समाज का सरोकार और दृष्टि बोध न हो। .....शामिल कहानियों के पीछे वे समस्त विसंगतियाँ हैं जिनकी मूक दर्शक बनकर बैठना मुझे गवारा न हुआ।''[1]

नारी का जीवन जन्म से मृत्यु पर्यन्त इन रीति–रिवाजों की जंजीरों में इस कदर जकड़ा रहता है कि उसकी पूर्ण सामाजिक स्वतंत्रता की कल्पना करना सम्भव नहीं। इस संदर्भ में विशेषकर ममता जी के उपन्यासों में नारी की स्वतंत्रता सामाजिक व्यक्तित्व के आधार पर विकसित हुई है, जिसमें नारी के सामाजिक यथार्थ, उसकी मानसिकता, जीवन के प्रति उसके दृष्टिकोण एवं मौजूदा व्यक्तित्व में परिवर्तन की चेतना दिखाई देती है। नारी आज पुरुष के समान ही घर की चौखट लाँघना चाहती है। चारदीवारों की बेड़ियाँ वह तोड़ना चाहती है। समाज में अपना स्थान महसूस करना चाहती है। नारी, समाज में रहकर समाज का पथप्रदर्शन भी करना चाहती है। अपने विचारों को समाज के समक्ष प्रस्तुत करना चाहती है।

नारी विवाह के पश्चात अपने बदलते परिवेश एवं भूमिकाओं में अपनी आकांक्षाओं को यथावत बनाए रखना चाहती है। ऐसी अवस्था में उसे जहाँ एक ओर परिवार से जुड़ना होता है वहाँ दूसरी ओर समाज से भी। किन्तु सामाजिक सम्बन्धों पर जब पारिवारिक सम्बन्धों का अतिक्रमण होता है तब दोहरी मानसिकता से नारी का मानसिक स्तर पर असन्तुलित बने रहना स्वाभाविक ही है। नारी–स्वतंत्रता आज वर्तमान जीवन के चिन्तन का प्रमुख विषय है।

आधुनिक नारी पुरुष की दासता, सामाजिक बंधनों से मुक्त होकर अपने अस्तित्व के प्रति जागरूक है। अपने क्रांतिकारी स्तर में अधिकारों की मांग करके, कर्तव्यों के प्रति निष्ठावान एवं आत्मविश्वासी है। आज के युग में पुरुषों से आगे निकलती नारियों में शिक्षा का सबसे अधिक सहयोग है। नारी की स्वतंत्रता का अर्थ है – अपनी अस्मिता की खोज के लिए संघर्षपूर्ण नारी। अनावश्यक मान्यताओं, सामाजिक बंधनों और मर्यादाओं से अपने को मुक्त करने की चाह उसमें बलवती हो उठी है। आज के पारिवारिक और सामाजिक जीवन में भी नई संदर्भ स्थितियाँ अंकुरित और प्रस्फुटित होती जा रही हैं। नारी का जीवन वह नहीं रहा है जो पहले था। आज की नारी काँच की मूरत नहीं रह गई है। वह एक जीवित हकीकत बनकर समाज का अविभाज्य अंग बन चुकी है।''[2]

उपन्यासकार ममता कालिया ने अपनी रचना प्रक्रिया में नारी की स्वतंत्रता पर विशेष बल देते हुए आधुनिक शिक्षित, संघर्षरत नारियों का चित्रण किया है। उन्होंने नारी के मानसिक द्वन्द्व एवं संवेदनाओं को यथार्थ वाणी प्रदान कर जीवनगत विसंगतियों को अभिव्यक्त किया है। नारी की स्वतंत्रता के प्रति कोमल राजदेव से बातचीत के दौरान लेखिका कहती है– ''स्वतंत्रता'' शब्द का परिसर इतना विस्तृत है कि इसका दूसरा छोर अराजकता और उच्छृंखलता से मिलता है। इस शब्द में यह भाव भी निहित है कि नारी किसी के अधीन रही है और उससे मुक्ति की कामना करती है। जबकि आप पाएंगी कि ऊपरी व्यवहार में वह लाख आज्ञा–पालन करें, उसका अन्तर्मन लगातार पारंपरिक चौखटे तोड़ता चलता है। लेखिकाओं की बढ़ती तादाद इसका प्रमाण है।

ममता कालिया के उपन्यासों में चित्रित नारियाँ अपनी स्वतंत्रता एवं स्वाभिमान के प्रति सजग है। वर्तमान जगत में नारी आर्थिक रूप से स्वावलम्बी बनकर प्रत्येक कार्य क्षेत्र में सहभागी है। नरक–दर–नरक उपन्यास की उषा वैवाहिक जीवन से त्रस्त अपनी निजी स्वतंत्रता के नष्ट होने से स्वयं को उलझन में पाती। यद्यपि माँ बनना सौभाग्य की बात है, किन्तु उषा के लिए बच्चा उसकी आगामी योजनाओं में फिट नहीं हो पा रहा था। उसे पल–पल अपनी स्वतंत्रता खोने का एहसास उदासी से भर देता है। उपन्यास के संवाद में – ''उषा को लग रहा था उसके अन्दर का साबूत हिस्सा टूट कर खंड–खंड हो गया है। वह हवाई जहाज सी क्रैश कर गई है। एक बेहिसाब उदासी और थकान उसके शरीर और मन को जकड़े थी। उसे लगा अब बहुत भूल जाना होगा ..... यह कि उनके यहाँ सुबह–सुबह अखबार आता था, यह कि उसे घंटों ढेरों पर फिल्म देखना प्रिय था, यह कि उसे कलफ लगी धोती घर में पहनना बहुत पसन्द था, उसे अब सही मायनों में स्त्रियोचित गुणों से मंडित होना था।''[3]

इस प्रकार ममता कालिया ने नारियों की स्वतंत्रता तथा उसकी अस्मिता के प्रति संवेदनशील दृष्टि रखकर अपने उपन्यासों में चित्रित किया है। नन्दिता, जया, उषा, रेखा, प्रतिभा आदि पात्र उपन्यास के कथ्य में अपनी स्वतंत्रता की पक्षधर होकर संघर्षरत हैं।

विश्लेषण –

लेखिका का मत है कि स्वतंत्रता की सीमा–रेखा का नाम है सुबुद्धि। वही सीमा किसी और ने तय की तो स्वाधीनता की अवधारणा नष्ट हो जाएगी। स्त्री अपने मन से जिये, सोचे, लिखे, बोले। परिवेश के प्राणी उसे सेंसर की निगाहों से न देखें और उस पर संदेह कर उसका आचरण कुंठित न करें, यही स्त्री की स्वाधीनता है।''[4]

ममता कालिया ने अपने उपरोक्त विचारों को अपने उपन्यासों में सम्मिलित कर नारी की स्वतंत्रता को प्रदर्शित किया है। 'बेघर' की संजीवनी अपनी स्वतंत्रता के प्रति जागरूक नारी है। घर की कुंठाओं, विषमताओं के मध्य वह शिक्षित होकर नौकरी करती है। सहपाठी विपिन के द्वारा दुराचार को भी वह महज एक दुर्घटना मानकर जीवन में आगे बढ़ती है। उसका आकर्षक व्यक्तित्व, भूरा रंग, सलीकेदार वेशभूषा, चेहरे में आत्मविश्वास देखकर परमजीत सहज ही उसकी ओर आकर्षित हो गया। लेखिका लिखती हैं – ''उसका झुका हुआ चेहरा

लावण्यपूर्ण लग रहा था। यह चेहरा प्रसाधनहीन होने पर भी आधुनिक लड़की का था, एक अलग किस्म की आधुनिक लड़की जो अक्सर कला दीर्घाओं या पत्र–पत्रिकाओं के दफ्तर में दिख जाती है। उसकी नाक पर चश्में का दबाव से निशान पड़ गया था जैसे किसी ने चुटकी से दबा दिया हो।''[5]

'बेघर' की संजीवनी अपने संघर्षपूर्ण जीवन में कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों के प्रति पूर्ण निष्ठावान है। अपनी आँखों में दर्द और उदासी लिए अपने स्वतंत्र अस्तित्व के लिए वह नौकरी करती है। वह परमजीत से कहती है – ''नौकरी करती हूँ। इसी से तो भाभी कुछ बोल नहीं सकती। जब से भाई ने बिजनेस में हाथ लगाया है भाभी का दिमाग आसमान पर चढ़ गया है, सोचती है सारा घर उनका है। पैसे–वैसे की बातें सुनना मुझे पसन्द नहीं। पिछले साल तक तो मैं घर पर थी। पर भाभी, माँ की दवाइयों का बिल देखकर मुँह बनाती थी तो मुझे बर्दाश्त नहीं हुआ।''[6]

ममता कालिया 'केकी' के चरित्र–चित्रण में ने अपनी अद्भुत प्रतिभा को दर्शाया है। अत्यधिक मोटी अविवाहित 'केकी' अपने स्वतंत्र जीवन में खुश है वह विवाह जैसे बंधनों को न मानकर स्वयं अकेले रहती है। 'केकी' ऐसी नारी का प्रतिनिधित्व करती है जिसका रिश्तों पर भी विश्वास नहीं है। वहीं विजया जैसे स्वतंत्र व्यक्तित्व वाली नारी का भी चित्रण लेखिका ने किया है, जो बिना विवाह किये अपने बॉस के साथ एक ही घर में रहती है।

'लड़कियाँ' उपन्यास की 'लल्ली' अपने स्वतंत्र अस्तित्व के लिए मुंबई जैसे महानगर में अकेली रहती है। 'लल्ली' ऐसी नारी है, जिसे अपनी स्वतंत्रता सबसे अधिक प्रिय है। अपनी प्रतिभा तथा जीवन में बहुत कुछ करने की चाह में वह घर से दूर मुंबई के एक विज्ञापन एजेंसी में काम करती है। उपन्यास के संवाद में लल्ली कहती है – ''जब मैं हाईस्कूल में थी, डॉक्टर बनना चाहती थी, जब बी.ए. में थी लेखक बनना चाहती थी। जब मैं एम. ए. में आई मैं शादी करना चाहती थी, मेरा एक भी इरादा पूरा नहीं हुआ था, लेकिन इस वक्त विज्ञापन एजेंसी की इस नौकरी में मेरा वेतन तीन हजार था। अब मैंने अपने सारे इरादे भुला दिए थे। मेरे व्यक्तित्व का सर्वश्रेष्ठ अंग नौकरी को समर्पित था। मेरी समस्त संवेदना, कल्पनाशक्ति और रचनात्मकता जिंगल और स्लोगन लिखने में लगी थीं।''[7]

ममता कालिया के उपन्यास 'दुक्खम–सुक्खम' की प्रतिभा अपने नाम के अनुसार ही अत्यंत प्रतिभावान नारी है। नाट्यकला में प्रवीण, प्रतिभा शिक्षा में भी अव्वल है। प्रतिभा आधुनिक नारी है, वह अपने स्वतंत्र अस्तित्व के प्रति सचेत आत्मशक्ति सम्पन्न है। मॉडल बनने की चाह में, विज्ञापन जगत में स्वयं को स्थापित करने वह बम्बई जाना चाहती है। पिता के मना करने पर वह उनसे बहस करती है। उपन्यास के संवाद से – ''मैं लोगों की परवाह नहीं करती। लोग हमारे किस काम आते हैं।'' ''बेवकूफ है तू समाज के बिना व्यक्ति की कोई जगह नहीं होती। समाज में आज भी विवाह से पहले लड़की का घर से बाहर चला जाना अपचर्चा का कारण बनता है।'' ''पापा आपकी बातें असंगत हैं। वैसे तो आप बड़े मॉडर्न, क्रांतिकारी बनते हैं। क्या मैं मानू आपकी समस्त शिक्षा–दीक्षा गलत निकली।''[8]

अंततः प्रतिभा मात्र एक चिट्ठी द्वारा सूचित कर बम्बई चली जाती है तथा सफलता भी हासिल करती है। प्रतिभा जैसी नारी अपनी स्वतंत्रता, अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति पूर्णरूप से दृढ़ संकल्पित है। प्रतिभा की तुलना में मनीषा अधिक संवेदनशील, साधारण रूप रंग की नारी है। किन्तु पूरे कथ्य में वह अपने गुणों को विकसित कर आत्मशक्ति सम्पन्न बनती है। घर परिवार के प्रति उसके मन में पूर्ण आदर है। अपनी शिक्षा के प्रति वह सदैव अग्रसर रहती है। आज के सामाजिक संदर्भ में 'नारी की स्वतंत्रता' में पुरुषों से समानाधिकार की भावना प्रतिष्ठित हुई है। पाश्चात्य नारी मुक्ति आंदोलन ने भारतीय नारी को मानसिक, सामाजिक, शैक्षणिक एवं आर्थिक स्तर पर जाग्रत करने का अद्भुत कार्य किया।

वर्तमान परिवेश में नारियाँ प्रत्येक क्षेत्र में अपनी स्वतंत्रता के प्रति पूर्णरूप से जागरूक हैं। 'प्रेम–कहानी' उपन्यास की जया और यशा भी अपने आगे की शिक्षा के लिए दिल्ली जाती हैं। जया शिक्षा के महत्व को समझते हुए दर्शनशास्त्र में एम.ए. की पढ़ाई के लिए घर से दूर दिल्ली में किसी रिश्तेदार के घर रहती है। किन्तु जल्द ही अंकल के बुरे व्यवहार की वजह से वो हॉस्टल में रहने लगती है। जया ऐसी नारी है, जो शिक्षा व स्वतंत्रता पाकर आत्मनिर्भर बनना चाहती है। अपनी स्वतंत्रता के संबंध में जया कहती है– ''आत्मनिर्भर व आजाद रहने से जीवन में एक नई ताजगी आ गई। वक्त–बेवक्त दिल्ली की धूल फाँकने में बस की धक्का–मुक्की में, जनपथ की पटरी–शॉपिंग में एक निराला मजा आने लगा। यशा इस सब में साथी थी ही।

हॉस्टल की अन्य लड़कियों से भी पट निकली कभी–कभी हम बीस–बीस लड़कियाँ इकट्ठी निकलती और जिस दुकान में घुसती, दुकानदार की नाक में दम कर देतीं। बस में बैठती तो हमारी ही–ही, हाँ–हाँ में और कुछ सुनाई न पड़ता।''[9]

लड़कियाँ उपन्यास के भी अन्य पात्र 'अफशाँ' भी आत्मविश्वासी नारी है। मॉडल बनने की चाह में पाकिस्तान से मुंबई आती है। अपने 'स्व' की खोज में मात्र 18 वर्षीय अफशाँ अपने सपने को साकार करने हेतु संघर्ष करती है।

'अधेरे का ताला' उपन्यास में प्रधान अध्यापिका के पद पर कार्यरत नन्दिता कॉलेज में अपनी गरिमा, अपनी अस्मिता के लिए सतत् संर्घरत है। पूरे कथ्य में नन्दिता कभी छात्राओं के लिए, कभी कॉलेज शौचालय के लिए, शिक्षिकाओं के लिए, फंड आदि के लिए स्वयं सतत् संघर्ष करती है। एक रौबदार महिला होते हुए भी कई बार दुर्घटना की शिकार होती है, किन्तु उससे हताश न होकर साहस का परिचय देती है। ममता कालिया ने इस उपन्यास के माध्यम से ऐसी आधुनिक नारी का चित्रण किया है, जो परिस्थिति एवं समस्याओं का डटकर सामना करती है। लेखिका लिखती है– ''नन्दिता धमकियों से डरने वाली चीज नहीं थी। उसे यह भी आभास था कि वह अपने ऑफिस की सुरक्षित कुर्सी पर बैठी है। यहाँ से वह बड़े–बड़ों की छुट्टी अपनी एक भृकुटि से कर देती है।''[10]

अपनी स्वतंत्रता एवं स्वाभिमान के प्रति सचेत 'दौड़' उपन्यास की रेखा पाठशाला में अध्यापिका थी। आधुनिक मार्केटिंग क्षेत्र में कितनी स्पर्धाएँ होती हैं इसका अहसास उसे था। इसी कारण वह अपने बच्चों को आदर्शवादी न बनाकर यथार्थवादी बनाना चाहती है। बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए, उनकी सुख–सुविधाओं के लिए, उनकी ऊँची शिक्षा के लिए रेखा आजीवन संर्घषरत रहती है। उसके संघर्षों को लेखिका ने इन शब्दों में व्यक्त किया – ''रेखा को याद आता गया। शादी के बाद महीनों में वह लाख घर का काम, स्कूल की नौकरी, खर्च का बोझ संभालती, माँ जी उसके प्रति अपनी तलखी नहीं त्यागती। अगर कभी पिता जी या राकेश उसकी किसी बात की तारीफ कर देते तो उस दिन उसकी शामत ही आ जाती। माँ जी की नजरों में रेखा चलती–फिरती चुनौती थी।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में परम्परा एवं सामाजिक मूल्यों को नष्ट करता युवा पीढ़ी वर्ग आधुनिकता के दौड़ में इतना आगे निकल आया है कि उनमें वैचारिक मतभिन्नता होना स्वाभाविक है। रेखा आधुनिक स्टैला को धीरे–धीरे स्वीकारती है। स्टैला ऐसी स्वतंत्र नारी का प्रतिनिधित्व करती है जो आठ घंटे कम्प्यूटर पर तो काम कर सकती है किन्तु आधा घंटा रसोई में नहीं। आधुनिकता की दौड़ में स्टैला सिर्फ वेशभूषा में ही नहीं प्रत्येक कार्य में पुरुषों के बराबर है। पुरातन रूढ़िग्रस्त नारी जीवन, जो अपना आधा से ज्यादा समय घर के कामों में व्यतीत कर देती थी। ऐसे जीवन को नकारती हुई स्टैला अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाती है। लेखिका लिखती है – ''स्टैला की आदत थी जब माँ–बेटे में कोई प्रतिवाद हो तो वह बिल्कुल हस्तक्षेप नहीं करती थी। उसकी ज्यादा दिलचस्पी समस्याओं के ठोस निदान में थी। उसने पिता से कहा, ''मैं आपको ऑपरेट करना सिखा दूंगी। तब देखिएगा सम्पादन करना आपके लिए कितना सरल काम होगा। जहाँ मर्जी संशोधन कर ले जहाँ मर्जी मिटा दे।'' रेखा की कई कहानियाँ उसने कम्प्यूटर पर उतार दी। बताया, मैम इस एक फ्लापी में आपकी सौ कहानियाँ आ सकती हैं। बस यह डिस्कैट संभाल लीजिए, आपका सारा साहित्य इसमें है।'' चमत्कृत रह गए दोनों। रेखा ने कहा ''अब तुम हमारी हो गई हो। मैम न बोला करो।''[11]

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात ऐसे उपन्यास लिखे गये जहाँ नारी को विवाह पूर्व प्रेम–सम्बन्ध स्थापित हो जाने के कारण पारिवारिक यातनाओं का शिकार होना पड़ा। विवाह पूर्व प्रेम–सम्बन्धों से कुण्ठित नारी समकालीन महिला उपन्यास की कथाओं का केन्द्र रही है। आज मानव पाश्चात्य सभ्यता की दौड़ में आगे जा रहा है। स्वाभाविक है कि बदलते परिवेश ने नारी को भी प्रेरित किया और वह भी स्वयं बदलने को कृत संकल्प हुआ। आज नारी एक 'नयापन' प्राप्त करना चाहती है। ममता जी के उपन्यासों की अधिकांश नायिकाएँ इस 'नयेपन' को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील दिखाई देती हैं।

संदर्भ –

[1] ममता कालिया – थिएटर रोड के कौवे (भूमिका), पृष्ठ 7
[2] ममता कालिया – बेघर (भूमिका), पृष्ठ 12
[3] ममता कालिया – नरक–दर–नरक, पृष्ठ 165
[4] शान्ति कुमार स्याल – भारतीय नारी और पश्चिमीकरण, पृष्ठ 31
[5] ममता कालिया – बेघर, पृष्ठ 45
[6] ममता कालिया – बेघर, पृष्ठ 66
[7] ममता कालिया – तीन उपन्यास (लड़कियाँ), पृष्ठ 79
[8] ममता कालिया – दुक्खम–सुक्खम, पृष्ठ 253
[9] ममता कालिया – तीन लघु उपन्यास (प्रेम कहानी), पृष्ठ 125
[10] ममता कालिया – अँधेरे का ताला, पृष्ठ 18
[11] ममता कालिया – दौड़, पृष्ठ 64